अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर

महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान

एवं

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर द्वारा आयोजित

साप्ताहिक योग प्रशिक्षण शिविर एवं योग-अध्यात्म-शैक्षिक कार्यशाला

15 से 21 जून, 2019 श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

प्रकाशनार्थ (द्वितीय सत्र-शैक्षिक कार्यशाला)

गोरखपुर 15 जून। कृष्ण, बुद्ध, पतंजलि एवं भगवान गोरक्षनाथ जी योग महानायक के रूप अवतार माना गया है। योग किसी व्यक्ति, जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय से सम्बन्धित नहीं है। योग रष्ट्रीय नहीं अपितु अन्र्राष्ट्रीय समस्या का समाधान है। योग का अनेक आयाम एवं मार्ग है।

उक्त बातें दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के दर्शन शास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो0 द्वारिकानाथ जी ने अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला महायोगी गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान, गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में द्वितीय सत्र के सैद्धान्ति सत्र में "राष्ट्र निर्माण में योग की उपादेयता" विषय पर कही। उन्होनें योग प्रशिक्षुओं को आगे सम्बोधित करते हुए बताया कि लक्ष्य ईश्वरत्व की प्राप्ति ही योग है। योग कल्पना नहीं पूर्णरूप से विज्ञान है। योग का सिद्धान्त आदिकाल से ऋषि परम्परा, वैदिक परम्परा से प्राप्त होता है। श्वेताश्वेत उपनिषद में आत्मा से परमात्मा का सम्बनध होना योग माना गया है। योग मनुष्य को राष्ट्र के प्रति समर्पण, निष्ठा, धैर्य, ओजस्विता, पराक्रम, शौर्य, कान्ति, कर्तब्य, निष्ठ, सत्याचरण का मार्ग प्रशस्त करता है। यौगिक क्रिया से ओतप्रोत ब्यक्ति त्रिविध ताप से मुक्त हो जाता है। सहिष्णुता नैतिकता का महामंत्र योग है। राष्ट्र निर्माण मे सार्वभौमिक विकास उन्नयन का मार्ग योग प्रदान करता है जिससे ब्यक्ति का ब्यक्तित्व विकसित होकर भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार का नाश करने में समर्थ होकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देकर उदार चरित्र का प्रदर्शन करके धर्माधारित संकल्प को पूर्ण करके राष्ट्र के वैभव को अक्षुण्य सास्वत स्थापना करने में अपनी प्रधानता स्थापित करता है।

कार्यक्रम में आये हुए अतिथियों का आभार योगाचार्य डॉ. चन्द्रजीत यादव द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. रोहित मिश्र ने किया। कार्यक्रम में योग एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के आचार्य उपाचार्य आदि उपस्थित रहें।